प्रतिदर्श प्रश्नपत्र - 3, 2021-22

द्वितीय सत्र

विषय- हिंदी 'ए' (कोड-002)

निर्धारित समय : 2 घंटे **पूर्णांक : 40**

सामान्य निर्देश :

- इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं–खंड 'क' और 'ख'।
- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं, यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार ही लिखिए।
- लेखन कार्य में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखिए।
- खंड-'क' में कुल 3 प्रश्न हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए इनके उपप्रश्नों के उत्तर दीजिए।
- खंड-'ख' में कुल 4 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए चारों प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड–'क' (पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक) 20 अंक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

(क) नवाब साहब के खीरे खाने के आग्रह में उनकी शराफ़त झलकती है। कैसे?

(ख) बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

(ग) मनुष्य अन्य बहुत-सी बातें भूल जाता है, किंतु दूर रह कर भी माँ के स्नेह को नहीं भुला पाता है। संन्यासी फ़ादर बुल्के भी अपनी माँ को नहीं भूल पाते हैं। इस आधार पर माँ के प्रति उनकी भावनाओं को व्यक्त कीजिए।

(घ) फ़ादर बुल्के भारतीयता में रच-बस गए। ऐसा उनके जीवन में कैसे संभव हुआ होगा? अपने विचार लिखिए।

उत्तर– (क) नवाब साहब में भी नवाबी ठसक तो है, परंतु उसमें उद्दंडता, उच्छृंखलता नहीं है। लेखक को सामने आया हुआ देखकर अपेक्षा करते हैं कि लेखक ही अपनी तरफ़ से पहल करें, किंतु लेखक के ऐसा न करने पर कुछ विचार कर स्वयं ही पहल करते हैं। यह उनका बड़प्पन है। नवाब साहब के खीरे खाने के आग्रह में केवल औपचारिकता नहीं है। एक बार के सामान्य आग्रह को लेखक के नकारने पर भी खीरों की प्रशंसा करते हुए पुनः गंभीरता से आग्रह करते हैं और प्रेरित करते हैं। इसमें उनकी सहज विनम्रता झलकती है।

(ख) कहानी किसी घटना का ऐसा वर्णन है जो किसी विशेष कारण की ओर संकेत करती है। घटना कैसे घटी, उसके क्या कारण थे, उसका क्या परिणाम हुआ। यह सब जानने की जिज्ञासा मन में बनी रहती है और घटना बिना कारण के नहीं होती है। अतः बिना पात्र के कहानी तथा बिना कारण के घटना कैसे संभव है? घटना के बिना विचार कैसे? अतः लेखक का मानना है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी नहीं लिखी जा सकती है। यह पूर्णतः सत्य है। मेरा विचार उनके विचारों के अनुकूल है।

(ग) लेखक फ़ादर के बारे में बताता है कि वे अकसर माँ की स्मृति में डूब जाते थे। उनकी माँ की चिट्ठियाँ अकसर उनके पास आती थीं। वे अपने अभिन्न मित्र डॉ० रघुवंश को चिट्ठियाँ दिखाते थे। पिता और भाइयों के लिए उनके मन में बहुत लगाव नहीं था। वे भारत में बस जाने के बाद भी अपनी मातृभूमि और माँ को नहीं भूल पाए थे। अतः स्पष्ट है कि फ़ादार बुल्के जैसे संन्यासी का लंबे समय तक माँ से अलग रहकर माँ को न भुला पाना स्पष्ट करता है कि उनके अंदर माँ के प्रति जो स्नेह था, वह स्नेह की पराकाष्ठा है।

(घ) फ़ादर बुल्के निश्चित ही प्रबुद्ध व्यक्ति थे। भारत में आकर भारतीय संस्कृति के बारे में जानने की उनके मन में उत्कट जिज्ञासा रही होगी, फलस्वरूप उन्होंने हिंदी और संस्कृत सीखा और इनके साहित्य का विधिवत् अध्ययन किया। उस अध्ययन में स्थान-स्थान पर बिखरे भारतीय संस्कृति की विशेषताओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके और चल पड़े उसी राह पर। उन्होंने शोध प्रबंध में रामकथा का चयन किया। राम के आदर्शों को जानते गए और उस महानायक के चरित्र से प्रभावित हुए और उन्हें ही अनुकरणीय और आदर्श पुरुष मानने लगे। फिर तो भारतीयता में पूरी तरह रच-बस गए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं <u>तीन</u> प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में लिखिए। $2 \times 3 = 6$

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'उत्साह' के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(ख) इस सत्र में पढ़ी गई कविताओं के आधार पर किसी एक कवि के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

(ग) इस सत्र में पढ़ी गई किस कविता में माँ की चिंता को अभिव्यक्त किया गया है और इसका कारण क्या है?

(घ) आपके द्वारा पढ़ी गई किस कविता में कवि ने नारी और समाज की सोच पर सहज रूप से व्यंग्य किया है? उन व्यंग्यों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– (क) कवि ने उत्साह कविता में बादलों से गरजने की कामना की है और ऐसी गरजना, जिससे जन-सामान्य में चेतना का संचार हो जाए। ऐसी गरजना, जिसकी गड़-गड़ाहट सुनकर उदासीन लोग भी उत्साहित हो जाएँ। कवि अपेक्षा करता है कि लोग बादल की गरजना से अपनी उदासीनता छोड़ दें और उत्साहित हो जाएँ। ऐसी अपेक्षा करते हुए कवि ने कविता का शीर्षक 'उत्साह' रखा है।

(ख) 'उत्साह' कविता में निहित भावों के आधार पर हम कह सकते हैं कि निराला जी बहुत स्वाभिमानी व्यक्तित्व के स्वामी हैं। उनमें उत्साह और पौरुष भी है। उनकी वाणी में जन-सामान्य में नवीनता का संचार करने वाली ओजस्विता है। उनके हृदय में जन-सामान्य के प्रति संवेदना है, सहानुभूति है। इसलिए बादलों से गरजने की कामना करते हैं, जिससे गर्मी के कारण उनकी उदासीनता दूर हो जाए। वहीं 'अट नहीं रही है' कविता को पढ़ने से उनके व्यक्तित्व का एक दूसरा पक्ष उभरकर सामने आता है। इसमें वे प्रकृति की सुंदरता से केवल आनंद-विभोर ही नहीं होते हैं अपितु प्रकृति के नव-पल्लवों का चित्रण बहुत बारीकी से करते हैं। इससे उनके सूक्ष्मदर्शी होने का संकेत मिलता है।

(ग) 'कन्यादान' कविता में एक माँ की अपनी बेटी को लेकर स्वाभाविक चिंता व्यक्त हुई है। इस चिंता के कारण हैं–

(*i*) बेटी को अभी दुनियादारी की समझ नहीं थी।

(*ii*) बेटी अभी भोली और सरल थी। वह आग का दुरुपयोग कर सकती थी।

(*iii*) बेटी अपने रूप-सौंदर्य पर सम्मोहित हो सकती थी।

(*iv*) बेटी वस्त्राभूषणों के भ्रम में फँसकर शोषण का शिकार हो सकती थी।

(घ) कवि ने 'कन्यादान' कविता में सामान्य रूप से बड़ी विनम्रता और सहजता से वर्तमान समाज पर व्यंग्य किए हैं, किंतु इन व्यंग्यों में तीक्ष्णता नहीं है। कविता में आए व्यंग्य इस प्रकार हैं–'अपने चेहरे पर मत रीझना'–यहाँ माँ ने अपनी बेटी को सीख दी है, साथ ही उन लड़कियों के प्रति व्यंग्य है जो अपने सौंदर्य के कारण इतराती, इठलाती हैं।

'वस्त्र और आभूषण शाब्दिक-भ्रमों की तरह बंधन हैं स्त्री जीवन के'– यहाँ कवि ने आभूषण-प्रिय नारी जगत् पर व्यंग्य किया है और सावधान किया है। शब्द-जाल की तरह वस्त्र-आभूषण भी नारी को किस प्रकार भ्रमित करते हैं, नारी आभूषणों के लिए क्या-क्या नहीं करती है–पर प्रकाश डाला गया है।

इस तरह कवि ने नारी और समाज की सोच पर सहज-रूप में व्यंग्य किया है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं <u>दो</u> प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए– **3 × 2 = 6**

(क) 'भोलानाथ और उसके साथियों के खेल आज के खेल और खेल-सामग्री की अपेक्षा मूल्यों का विकास करने में अधिक समर्थ थे।' 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ख) जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करता है? आप इस बारे में क्या सोचते हैं?

(ग) प्रकृति जल-संचय की अद्भुत व्यवस्था करती है। 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। पानी बचाने के लिए आप अपना योगदान किस प्रकार दे सकते हैं?

उत्तर– (क) आज बच्चे अधिकांश खेल कमरों में रहकर अकेले खेलना चाहते हैं। इन खेलों में प्रयुक्त सामग्री मशीन निर्मित होती है। इसके विपरीत भोलानाथ के खेल खुले मैदानों में खेले जाते थे। इनमें पक्षियों को उड़ाना, खेती-बारी करना, बारात निकालना, भोज का प्रबंध करना आदि मुख्य थे। ये खेल साथियों के साथ खेले जाते थे, जिनसे सहभागिता, सद्भाव, मेल-जोल (मित्रता) आदि मूल्य विकसित होते थे। इसके अलावा इन खेलों की सामग्री में प्राकृतिक वस्तुएँ शामिल होती थीं, जिनसे प्रकृति से जुड़ाव और उसे संरक्षित करने के अलावा, सामाजिक रूप से राष्ट्र-प्रेम का उदय एवं विकास होता था।

(ख) जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता, यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक का संकेत है कि जिस जॉर्ज पंचम की नाक के लिए सरकारी तंत्र के सभी हुक्मरान चिंतित थे, उसकी नाक तो अपने देश के लिए शहीद हुए बच्चों की नाक से भी छोटी थी। इस तरह जॉर्ज पंचम की स्थिति गोखले, तिलक, शिवाजी, गांधी, पटेल, बोस की तुलना में नगण्य थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ग) प्रकृति की हर व्यवस्था अद्‌भुत होती है। वह जल बचाने के लिए उसका संचय भी अद्‌भुत ढंग से करती है। यह व्यवस्था हिमशिखरों के रूप में दिखाई देती है। प्रकृति सरदियों में जिस पानी को बरफ़ के रूप में संचित करती है, उसी पानी को गरमी में प्यासे होंठों को तर करने के लिए अमृत के रूप में लोगों को बाँटती है। इतना ही नहीं, यही पानी फसल उगाने और धरती की प्यास बुझाने के काम में भी लाया जाता है। ऐसे बहुमूल्य जल को बचाने के लिए हमें पानी को बरबाद होने से बचाना चाहिए। खुले नलों से बहते पानी को तुरंत बंद कर देना चाहिए। घर तथा रसोई के अपशिष्ट पानी से गमलों में लगाए गए पौधों की सिंचाई करनी चाहिए। जल-स्रोतों में नहाना, कपड़े धोना, जानवरों को नहलाना जैसे काम नहीं करने चाहिए। कुल मिलाकर, पानी को दूषित करके बेकार नहीं करना चाहिए।

खंड–'ख' (रचनात्मक लेखन) 20 अंक

4. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए– **(5)**

(क) इंटरनेट : एक संचार क्रांति

संकेत-बिंदु– • आधुनिक युग-विज्ञान का युग • इंटरनेट के लाभ • समस्याएँ • सावधानियाँ।

(ख) **लड़का-लड़की एक समान, दोनों से ही घर की शान**

संकेत-बिंदु– • समाज में लड़का-लड़की के प्रति भिन्न दृष्टिकोण • लड़कियों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन • समाज में दोनों की समानता • लड़कियों के प्रति भेदभाव की समाप्ति व उनका सम्मान।

(ग) **सब दिन होत न एक समान**

संकेत-बिंदु– • भूमिका • परिवर्तनशील प्रकृति • समय की गतिशीलता • समय बलवान • निष्कर्ष।

उत्तर– (क) आधुनिक युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मानव को असीम शक्तियाँ देकर उसके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। विज्ञान की उपलब्धियों में कंप्यूटर व इंटरनेट का विशेष स्थान है। प्रत्येक विषय से जुड़ी जानकारी हमें इंटरनेट द्‌वारा आसानी से प्राप्त हो जाती है। चाहे वे पढ़ाई से संबंधित विषय हों या मनोरंजन से जुड़े विषय, सबकी जानकारी तुरंत प्राप्त हो जाती है। आज इंटरनेट ने व्यक्ति को पंक्तियों में खड़े होकर घंटों बिजली के बिल जमा करने में या रेलवे बुकिंग, हवाई यात्रा बुकिंग में होने वाली समय की बर्बादी से बचाया है। इंटरनेट द्‌वारा पत्र व संदेश भी भेजे जा सकते हैं। ई-मेल द्‌वारा हम घर बैठे ही अपने मित्रों, सगे-संबंधियों व विभिन्न संस्थानों से पत्र व्यवहार कर सकते हैं। आज बोर्ड कक्षाओं के विद्‌यार्थी विद्‌यालय में परीक्षा परिणाम पहुँचने से पहले ही इंटरनेट पर उसे जान लेते हैं। हालाँकि आज इंटरनेट अपने साथ हमारे जीवन में कुछ नई-नई समस्याएँ भी लेकर आया है। इंटरनेट द्‌वारा नए प्रकार के अपराधों का जन्म हुआ है, जिन्हें साइबर क्राइम कहा जाता है। इसके माध्यम से चोरी करने वालों को हैकर्स कहा जाता है। इन अपराधियों को पकड़ने के लिए सरकार कानून बना रही है। इस प्रकार यह मानव पर निर्भर करता है कि विज्ञान के इस महत्वपूर्ण देन का सदुपयोग कर उसको वरदान सिद्‌ध करता है या दुरुपयोग कर अभिशाप।

(ख) हमारे समाज में लड़का-लड़की में भेदभाव किया जाता है। लड़के के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती हैं और लड़की के जन्म पर मातम छा जाता है। यह व्यवहार किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। वर्तमान समय में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है और उस पर नियंत्रण लगाना आवश्यक है। अत: संतान की संख्या को सीमित रखना होगा। हमें लड़का-लड़की को एक समान समझना होगा। यदि आज के समय में देखा जाए तो हम देखते हैं कि लड़कियाँ किसी भी दृष्टि से लड़कों से कम नहीं हैं। वे पढ़ाई-लिखाई और नौकरी की दृष्टि से श्रेष्ठ सिद्‌ध हो रही हैं। लड़कियाँ भी परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाने में पीछे नहीं रहतीं। माता-पिता की सेवा करने में भी वे एक कदम आगे रहती हैं। हमें अपने घर-परिवार में लड़की को भी उचित सम्मान देना चाहिए। समाज को लड़का-लड़की दोनों की समान रूप से आवश्यकता होती है। किसी एक की कमी से समाज का संतुलन गड़बड़ा सकता है, इसलिए केवल लड़कों की कामना करना उचित नहीं है। दोनों एक समान हैं। लड़का भी कपूत हो सकता है, परिवार की मान-मर्यादा नष्ट कर सकता है। हालाँकि हम आदर्शवादी बातें तो करते हैं कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:', परंतु व्यवहार में इसे अपना नहीं पाए हैं। अब से हमें व्यवहारवादी बनना होगा। लड़का और लड़की को एक समान मानने में ही हमारी भलाई है। अब तक लड़कियों पर बहुत अन्याय होते रहे हैं, उन्हें परिवार और समाज में वह स्थान नहीं दिया गया है, जिनकी वे हकदार हैं। फलस्वरूप वे हीन भावना की शिकार होती जा रही हैं। यह स्थिति ज़्यादे दिन तक नहीं चलनेवाली। अब लड़कियों ने अपनी उपलब्धियों से समाज में सम्मानजनक स्थान पाना आरंभ कर दिया है। परिवार-नियोजन की स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि हम लड़का-लड़की को समान मानें और उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करें।

लड़का-लड़की एक समान।
तभी होगा देश का उत्थान॥

(ग) समय परिवर्तनशील है। समय कभी एक-सा नहीं रहता। संसार की प्रत्येक वस्तु जड़ या चेतन परिवर्तनशील है। प्रकृति में भी नित नए

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

परिवर्तन देखने को मिलते हैं, यहाँ ऋतुएँ भी क्रम से आती-जाती हैं तथा अपना रंग-रूप व छटा बिखेर कर चली जाती हैं। दिन-रात भी कभी एक जैसे नहीं रहते। प्रकृति में भी अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। एक छोटा-सा पौधा वृक्ष का रूप धारण कर लेता है। कली समय के साथ सुंदर फूल में बदल जाती है। समय के साथ-साथ परिवर्तन होता रहता है। समय गतिशील है। वह भी एक जगह स्थिर नहीं रहता। व्यक्ति कई बार तो ठगा-सा ही खड़ा रहता है और समय अपनी चाल चल देता है। समय सचमुच बलवान है। समय के आगे सभी को झुकना पड़ता है। यदि सभी दिन एक जैसे ही रहते तो पूरे संसार में एकमात्र निराशा और दुख का ही साम्राज्य होता। इतिहास में असंख्य उदाहरण मिलते हैं, जिनमें हड़प्पा, मिस्र, चीन जैसी कभी विकसित रही सभ्यताएँ भी कालचक्र के हाथों नष्ट हो गईं। भारत भी कभी वैभवशाली देश माना जाता था। 'सोने की चिड़िया' कहलाता था, परंतु आज वह अपना रूप खो चुका है। सुख-दुख विधाता की देन है। समय कब किसको एक पल में राजा बना दे, अगले पल किसी राजा को रंक बना दे। समय पर किसी का ज़ोर नहीं चलता। इसलिए व्यक्ति को धन-दौलत तथा रूप पर घमंड नहीं करना चाहिए। कठिन समय में भी व्यक्ति को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। धैर्य और विवेक से काम लेना चाहिए, क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है।

5. किसी छात्रा को सम्मानित करने हेतु विद्यालय की प्रधानाचार्या को लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए। **(5)**

अथवा

अपने प्रिय मित्र को लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखकर धन्यवाद दीजिए कि आड़े वक्त में उसने किस तरह आपका साथ दिया था।

उत्तर– परीक्षा भवन

क०ख०ग० विद्यालय

नोएडा, उ०प्र०

14 नवंबर, 20××

प्रधानाचार्या महोदया

क०ख०ग० विद्यालय

नोएडा, उ०प्र०

विषय–छात्रा को सम्मानित करने हेतु पत्र।

महोदया

निवेदन है कि तृषा चौधरी हमारे विद्यालय की ऐसी प्रतिभाशालिनी छात्रा है, जिसने तैराकी प्रतियोगिता में अनेक मेडल प्राप्त कर विद्यालय के गौरव में वृद्धि की है। इतना ही नहीं, वह अदम्य साहस और उत्साह से भरपूर है।

तैराकी के अभ्यास के लिए पिता जी के साथ दिल्ली जाते हुए उसने सड़क पर एक घायल व्यक्ति को चीखते-कराहते हुए देखा। कोई वाहन उसे टक्कर मारकर भाग गया था। उसने उस घायल को अपनी कार से बिना किसी प्रकार की चिंता किए अस्पताल पहुँचाया और उसके घरवालों को सूचित किया। तृषा के इस मानवीय कार्य की अखबारों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है, उसका चित्र भी छपा है।

महोदया, तृषा हमारे लिए प्रेरणामयी छात्रा है, जिसमें मानवता, करुणा कूट-कूटकर भरी हुई है। उसने तैराकी में भी विद्यालय की पहचान बनाई है। अपनी कक्षा की ओर से मेरा आपसे अनुरोध है कि संपूर्ण विद्यालय के सामने उसके इस कृत्य की सराहना करते हुए उसे सम्मानित और पुरस्कृत करने की कृपा करें, जिससे हम सभी छात्रों को प्रेरणा मिले।

सधन्यवाद।

प्रार्थी

य०र०ल०

10 डी, अनुक्रमांक-36

अथवा

परीक्षा भवन

क०ख०ग० विद्यालय

नई दिल्ली

प्रिय मित्र क्षितिज

सादर नमस्ते!

मैं स्वयं सकुशल रहकर आशा करता हूँ कि तुम भी सपरिवार आनंद से होगे।

मित्र! पिछले महीने जिस तरह की विपदा हमारे परिवार पर टूटी, वैसी किसी के साथ न हो। दुर्भाग्य से यदि ऐसा हो भी तो तुम्हारे जैसा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मित्र उसके साथ अवश्य हो। मित्र! पिता जी की पर्स जब जेबकतरों ने निकाली तो उन्हें पता चल गया। बस रुकते ही वे जेबकतरों के पीछे भागते हुए जब सड़क पार कर रहे थे, तभी स्कूटर की टक्कर होने से घायल हो गए। जब हम सब अस्पताल पहुँचे तो हमारे पास पैसे बहुत कम थे। तुमने उस आड़े वक्त में अपने पिता जी को फ़ोन करके पैसे मँगवाए, जिससे इलाज संभव हो सका। उस दिन यदि तुम न होते तो ……। मित्र आड़े वक्त में इस तरह मदद करने के लिए मैं तुम्हें बार-बार धन्यवाद देना चाहता हूँ। भगवान ऐसा मित्र सभी को दे।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम और सुरभि को स्नेह कहना। शेष सब ठीक है। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

य०र०ल०

6. (क) आपने नया कोचिंग सेंटर खोला है। बच्चों को प्रवेश के लिए आमंत्रित करते हुए लगभग 50 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। (2.5)

अथवा

रचना साड़ियों की बिक्री बढ़ाने के लिए लगभग 50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

अथवा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) 'मध्य प्रदेश पर्यटन निगम' पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए किराए में छूट दे रहा है। इसका उल्लेख करते हुए लगभग 50 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। **(2.5)**

अथवा

आपको अपना घर बेचना है। उसकी खूबियाँ बताते हुए लगभग 50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

आइए **मध्य प्रदेश पर्यटन निगम** आइए

आपका स्वागत करता है

कमरे एवं
वातानुकूलित बसों के
किराए में भारी छूट

अपनी यात्रा को यादगार
बनाइए। मध्य प्रदेश आइए।।

संपर्क करें–
9811××××××

अथवा

बिकाऊ बिकाऊ बिकाऊ

30 फीट चौड़ी सड़क
पर स्थित, पॉश कॉलोनी,
नया जैसा, वास्तु के अनुरूप

**तीन कमरों वाला
मकान, चार बालकनी,
स्टोररूम,
दो बाथरूम**

अभी संपर्क करें– 9599×××××

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

7. (क) जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अपने मित्र को लगभग 40 शब्दों में शुभकामना संदेश लिखिए। **(2.5)**

अथवा

ईद के त्योहार पर प्रधानमंत्री की ओर से देशवासियों को लगभग 40 शब्दों में बधाई संदेश लिखिए।

उत्तर–

जन्मदिवस पर शुभकामना संदेश

5 मई, 20××
मध्याह्न 1 बजे

तुम्हारे जन्मदिन पर ये दुआ है हमारी।
जितने हों चाँद-तारे उतनी हो उम्र तुम्हारी।।

प्रिय मित्र सोहन, आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ। भगवान से यही प्रार्थना है कि आप सदा सुखी व स्वस्थ रहें।
राजेश कुमार
क.ख.ग.

अथवा

ईद हेतु बधाई संदेश

24 मई, 20××
शाम 7 बजे
प्रिय भारतवासियो!
आप सभी को 'ईद' की शुभकामनाएँ। आप सभी यह त्योहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाएँ। घर पर रहें, सुरक्षित रहें, क्योंकि जान है, तो जहान है।
नरेंद्र मोदी

(ख) स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर समस्त देशवासियों को लगभग 40 शब्दों में शुभकामना संदेश लिखिए। **(2.5)**

अथवा

पिता की मृत्यु संबंधी सूचना देने के लिए लगभग 40 शब्दों में एक शोक संदेश लिखिए।

उत्तर–

स्वतंत्रता दिवस हेतु शुभकामना संदेश

15 अगस्त, 20××
प्रातः 6: 00 बजे
सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। इस अवसर पर हमें अपने प्रिय देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का प्रण लेना चाहिए तथा जीवन के हर कदम पर देश के लिए त्याग करने को तत्पर रहना चाहिए।
प्रेषक
क.ख.ग.

अथवा

शोक संदेश

5 अगस्त, 20××
अपराह्न 1 बजे
मान्यवर
अत्यंत दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि मेरे पिता रवींद्र जैन (पत्रकार) का स्वर्गवास दिनांक 4 अगस्त, 20×× को हो गया है। जिनका दसवाँ दिनांक 13 अगस्त, 20×× को तथा तेरहवीं दिनांक 16 अगस्त, 20×× को होना सुनिश्चित हुआ है। अतः आप से विनम्र अनुरोध है कि उक्त अवसर पर पधारकर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने की कृपा करें।
शोकाकुल जैन परिवार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in